

## \* \* \* अलंकार \* \* \* (आभूषण)

[ अलं करोति शी अलंकारः ]

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व को अलंकार कहते हैं।  
अलंकार का शाब्दिक अर्थ है — 'आभूषण'।

जैसे प्रकार आभूषणों से शरीर की शोभा बढ़ती है उसी प्रकार अलंकारों से काव्य की शोभा बढ़ जाती है। अलंकारों के प्रयोग से काव्य अनोखरी हो जाता है।

### अलंकार के भेद :-

अलंकार के मुख्यतः दो भेद माने गये हैं परन्तु सामान्य अर्थों में अलंकार के **तीन** भेद होते हैं —

- 1
- 2
- 3

शब्दालंकार  
अर्थालंकार  
उभयालंकार

### 1) शब्दालंकार :-

जब कुछ विशेष शब्दों के कारण काव्य में चमत्कार

उपन्न होता है तो वहाँ शब्दाअलंकार होता है।  
शब्द विशेष के कारण कविता में सुन्दरता आ जाती है।

\* शब्दाअलंकार के भेद :-

- 1) अनुप्रास अलंकार
- 2) यमक अलंकार
- 3) श्लेष अलंकार

\* अनुप्रास अलंकार के भेद :-

- i) द्वैकानुप्रास अलंकार
- ii) वृत्तानुप्रास अलंकार
- iii) श्रुत्यनुप्रास अलंकार
- iv) अन्त्यानुप्रास अलंकार
- v) लाटानुप्रास अलंकार

ω अनुप्रास अलंकार :-

जहाँ समान वर्णों की आवृत्ति बार-बार होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

अनुप्रास अलंकार के भेद :-

- i) द्वैकानुप्रास अलंकार
- ii) वृत्तानुप्रास अलंकार
- iii) श्रुत्यानुप्रास अलंकार
- iv) लाटा अनुप्रास अलंकार

v) अन्त्या अनुप्रास अलंकार

(i) द्वैकानुप्रास अलंकार :-

जहाँ स्वरूप स्वं क्रम से व्यंजनो की आवृत्ति एक बार ही वहाँ 'द्वैकानुप्रास अलंकार' होता है।

उदाहरण :-

रीझी - रीझी रहसि - रहसि, उठे।  
सासै धरी आसु धरी कहत दधि-  
दधि दधि।

(ii) वृत्तानुप्रास अलंकार :-

जहाँ एक वर्ण की आवृत्ति बार-बार हो वहाँ वृत्तानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

(i) तरनि-तनुष्या तट्ट तमाल तरुवर बहु दधि  
(ii) रघुपति - राघव राणा राम  
(iii) कारि कुर कोकिल कहा का बैर काढ़ी है।

(iii) श्रुत्यानुप्रास अलंकार :-

जब कण, तालु, दन्त किसी एक ही स्थान से उच्चारित होने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है, वहाँ श्रुत्यानुप्रास होता है।

उदाहरण:- तुलसीदास सीकत निसिदिन  
देखत तुम्हारी निरुराई।

(iv) लाटा अनुप्रास अलंकार :-  
जहाँ स्फूर्तिक शब्दों की आवृत्ति हो और अन्वय करने पर अर्थ अलग-अलग हो जाये तो वहाँ 'लाटा अनुप्रास' होता है।

उदाहरण:  
पूत कपूत तो क्यूँ धन संचय ?  
पूत सपूत तो क्यूँ धन संचय ?

(b) तेगबहादुर हँ वे ही थे गुरु पदवी के  
पात समर्थ।  
तेगबहादुर हँ वे ही थे गुरु पदवी थी  
पिनके अर्थ ॥

(v) अन्त्या अनुप्रास अलंकार :-  
जहाँ अन्त में तुक मिलती हो वहाँ पर अन्त्या अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण:- कहत नटत, रीझत, खिझत, मिलत खिलत  
लाभियात।  
घरे घौन में करत हैं, नैनन ही  
सौं बात ॥

(2) यमक अलंकार :-

यमक शब्द का अर्थ होता है दो जब एक ही शब्द ज्यादा बार प्रयोग हो परन्तु हर बार अर्थ अलग-अलग आये वहाँ 'यमक अलंकार' होता है।

उदाहरण:  
कनक कनक ते सौ गुनी,  
मादकता अधिकाय।  
वा खारु बौरारु प्यंग,  
या पारु बौरारु ॥

- (ii) काली घटा का घमण्ड घटा।
- (iii) कबै कवि बेनी, बेनी ब्यास की चुराई लिही
- (iv) तीन बेर खाती थी, वे तीन बेर खाती हैं।
- (v) अक्षी मेरे हृदय की, उखशी तुम पर  
न्यौंदावर।
- (vi) माला फेरत प्यंग भया, फिरान मन  
का फेर।  
करका मनका डारि दे, मनका मनका  
फेर ॥

(3) श्लेष अलंकार :-

जब कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो परन्तु उनके अर्थ अलग-अलग हो, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण:- राहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब स्न पानी गये न उबरै, मोती, मानस, चून

श्लेष अलंकार दो प्रकार का होता है

- (i) सभंग श्लेष
- (ii) अभंग श्लेष
- (iii) सभंग श्लेष :-

जहाँ शब्द विशेष से उल्लेख निकालने के लिये जोड़ना या तोड़ना पड़े वहाँ पर सभंग श्लेष होता है।

उदाहरण:- अपौं तरयौना ही रह्यो, कृति सेवत इकरंग नाक बस बेसरि लह्यो, बसि मुक्तन केसंग

(ii) अभंग श्लेष :-

जहाँ पर शब्द को खाँटे बिना ही रूक से अधिक अर्थ निकले वहाँ पर 'अभंग श्लेष' होता है।

उदाहरण:- राहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब स्न पानी गये न उबरै, मोती मानस चून ॥

(ii) मधुवन की छाती देखो, सूखी कितनी इसकी कलियाँ।

(2) अर्थाअलंकार :-

अर्थ के कारण जहाँ पर काव्य में चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ अर्थाअलंकार होता है।

अर्थाअलंकार के भेद तो अनन्त हैं किन्तु आचार्यों ने इसकी संख्या 125 बतायी है। इनमें कुछ विशेष हैं—

- |                 |                       |
|-----------------|-----------------------|
| (i) उपमा        | (vii) अन्योक्ति       |
| (ii) रूपक       | (viii) दीपक           |
| (iii) उपेक्षा   | (ix) विभावना          |
| (iv) अतिशयोक्ति | (x) अप्रस्तुत प्रशंसा |
| (v) आतिमान      | (xi) विरोधाभास        |
| (vi) संदेह      |                       |

(i) उपमा अलंकार :-

उपमा का अर्थ होता है 'तुलना'।

जब किसी व्यक्ति/वस्तु की तुलना किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु से की जाये तो वहाँ पर 'उपमा अलंकार' होता है।

उपमा अलंकार का शाब्दिक अर्थ होता है—

उप — निकट  
मा — निर्णय

उदाहरण - सागर सा गम्भीर हृदय हो  
गिरि सा अचा हो निष्कामन

उपमा अलंकार के अंग :-

- (a) उपमेय
- (b) उपमान
- (c) वाचक शब्द
- (d) साधारण धर्म

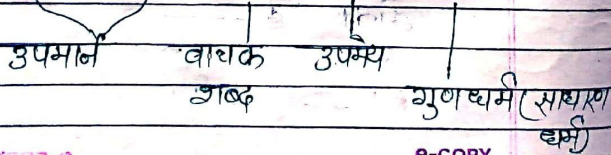
(a) उपमेय - जिसकी उपमा दी जाये।

(b) उपमान - जिससे उपमा दी जाये।

(c) वाचक शब्द - उपमेय और उपमान में समानता दिखाने के लिये जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसे वाचक शब्द कहते हैं।

(d) साधारण धर्म - उपमेय तथा उपमान के बीच के गुण को साधारण धर्म कहते हैं।

उदाहरण - पीपर पात सरिस मन डोला



उपमा अलंकार के दो भेद होते हैं -

- (i) पूर्ण उपमा (पूर्णोपमा)
- (ii) लुप्त उपमा (लुप्तोपमा)

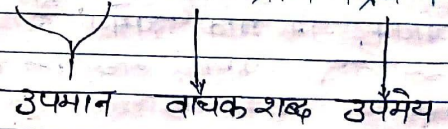
(i) पूर्णोपमा :-

जब उपमा के चारों अंग अलंकार में विद्यमान हो तब वहाँ पर पूर्ण उपमा अलंकार होता है। Exp:- पीपर पात सरिस मन डोला।

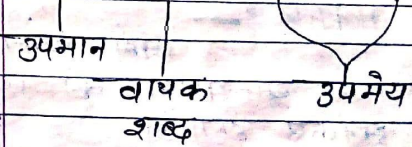
(ii) लुप्तोपमा :-

जहाँ पर उपमा के चारों अंगों में से कुछ का लोप हो जाये वहाँ लुप्त उपमा या लुप्तोपमा कहते हैं।

Exp-(a) कनक लता सी प्राण प्रिय।



(b) कल्पना सी अतिशय कोमल।



(i) रूपक अलंकार :- जहाँ पर 'उपमेय' और 'उपमान' में स्फुरकता दिखाई जाये वहाँ रूपक अलंकार होता है। जहाँ पर गुण की अत्यन्त समानता दिखाने के लिये उपमेय में ही उपमान का अशेद्व आश्रय कर दिया है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण :-

- (i) पायो जी मैंने शम रत्न धन पायो।
- (ii) चरण - कमल बन्दों हरिराई।
- (iii) मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैह्यो।
- (iv) जीवन की चंचल सरिता में फेकी मैंने मन की जाली।  
फस गयी मनोहर भावों की मछलियाँ सुधर भोजी भाली ॥

जहाँ, जीवन, मन भाव 'उपमेय' है जबकि सरिता, जाली, मछलियाँ उपमान है।

(v) मुख चपला सा दुःख धन में अलझा।

(iii) उत्प्रेक्षा अलंकार :- जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाये वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें कुछ वाचक शब्द प्रयुक्त होते हैं।

जो इसकी पहचान बनाते हैं।

जैसे -

मनु, मानो, मनु, पानो, पानहु, प्यो इत्यादि

उदाहरण :-

- (i) सौहत औढे पीत पट, स्याम स्कौने गात  
मनुहु नीलमनि सेल पर, अतप पर्यो प्रभात
- (ii) पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोकों से।  
मानो झूम रहे हैं तरु भी, मंद पवन के झोको से ॥
- (iii) हरिमुख मानो मधुर मयंक।
- (iv) साथी सोहत गोपाल के उर गुंजनमाल बाहर लसति मनो पिये दावानल की ज्वाल

(iv) अतिशयोक्ति अलंकार :-

जहाँ किसी वस्तु का इतना बड़ा-बड़ा कर वर्णन किया जाये कि लौपसिमा का उल्लंघन होने लगे तो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :-

(i) हनुमान की पूँछ में लगन पई आग लंका सरी ज्वरि गई गरु निशाचर प्रा

- (ii) देख लो साकेत नगरी है यही।  
स्वर्ग से मिलने गगन में प्यारी ॥
- (iii) कदम साथ ही म्यान ते, अमि पिपु तनते प्रम
- (iv) आगे नदियाँ पड़ी अपर,  
घोड़ा उतरे पर।  
शणा ने सोचा इस पर,  
तब तक चेतक था उस पर ॥
- (v) बालों को खोलकर मत चला करो दिन में  
रस्ता भूल जायेगा सुरष्प।

Note: अतिशयोक्ति = अतिशय + युक्ति  
अ + उ

(v) भ्रान्तिमान अलंकार:

इस अलंकार में अत्यधिक समानता के वस्तु में दूसरी वस्तु का भ्रम होता है; वहाँ 'भ्रान्तिमान अलंकार' होता है।

उदाहरण:- किन्सुक कुसुम पानकर अप्पा,  
भौरा शुक की लाल चोच पर।  
तोते ने भी चोच चलायी,  
जामुन का फूल उसे सम्झकर ॥

(ii) नाग सुष्ठु को वितर सम्झाकर,

बुसने लगा विषैला साप।  
कली ईश्व समझ विषधर ने,  
उठा लिया तब गध ने आपा ॥

(iii) पायँ महावर देन को नईन बैठी आया।  
फिर-फिर प्यानि महावरी, स्पडिन मीना  
प्याय ॥

(vi) संदेह अलंकार: जहाँ किसी वस्तु की विषय में शंका उत्पन्न होता है; 'वहाँ' 'संदेह अलंकार' होता है।

(i) सारी बीच नारी है, कि नरी बीच सारी है,  
कि सारी ही की नारी है, कि नरी ही कि सारी है ॥

(vii) विभावना अलंकार: जहाँ पर 'कारण' के बिना कार्य हो जाये, वहाँ 'विभावना अलंकार' होता है।

(i) बिनु पग नचले सुने बिनु काना।  
कर बिनु करम करे विधि नाना ॥  
आनन रहित स्कल रस भोगी।  
बिनु बाणी वक्ता, बड़ भोगी ॥